P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

ग्रामीण संसाधन और औद्योगिक विकास की सम्भावनाएँ : आजमगढ़ जनपद का प्रतीक अध्ययन

सुनील कुमार प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय
पीपीगंज, गोरखपुर (उ.प्र.)
भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र परिवहन मार्ग जाल और ग्रामीण औद्योगीकरण पर केन्द्रीत है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में जनपद आजमगढ़ (उ0प्र0) के सन्दर्भ में इस विषय का भौगोलिक अध्ययन किया गया है। संकल्पनात्मक रूप में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि किसी भी पिछड़े अर्थ तन्त्र में परिवहन मार्ग जाल ग्रामीण औद्योगीकरण को प्रोत्साहित करता है। क्योंकि परिवहन धरातल पर सामाजिक–आर्थिक संरचना के भू–वैन्यासिक प्रतिरूप को विकसित करने के लिए अधारभूत कारक का कार्य करता है। इसी आलोक में मानव के सामाजिक–आर्थिक विकास के क्रम में परिवहन मार्गों का भी विकास हुआ है। जिससे धरातल पर विभिन्न क्षेत्रों के मध्य भूवैन्यासीक तंत्र विकसित हो करके सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता में परिवर्तनशील प्रवृत्ति आयी है। आर्थिक रूप में परिवहन प्रत्यक्ष तौर पर उत्पादन में सहायक नहीं होता है। बल्कि उत्पादन में निवेश सम्बन्धी कारको को प्रोत्साहित करता है। बहुत से अर्थशास्त्रियों ने परिवहन को उत्पादन का आर्थिक कारक भी माना है। उल्मैन ने किसी क्षेत्र में परिवहन की उत्पत्ति के लिए परिपूरकता, मध्यवर्ती आपूर्ति स्रोतों का अभाव, विनिमय क्षमता को उत्तरदायी माना है। इस तरह दो विभिन्न भौगोलिक स्थितियां अथवा क्षेत्रों के मध्य परिवहन का विकास मानव की सामाजिक–आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए होता है। क्षेत्र में परिवहन के विभिन्न तथ्यों मार्ग, साधन, उत्प्रेरक शक्ति, गन्तव्य बिन्दु के विकास और वितरण से सामाजिक–आर्थिक विकास के क्षेत्रीय प्रतिरूप का विश्लेषण किया जा सकता है। किसी क्षेत्र में सामाजिक–आर्थिक विकास और परिवर्तनशली तकनीकी विकास के कारण परिवहन तन्त्र विकसित होता है। परिवहन तन्त्र के विकसित होने के बाद दूरी, समय और लागत के सन्दर्भ में क्षेत्रीय रूप में इन कारकों के सन्दर्भ में धरातल पर जो बिन्दु सर्वाधिक गम्य होता है, उसी पर विभिन्न मानवीय कारको का मूर्त स्वरूप विकसित होता है। वी0जे0एल0 बेरी, कान्सकी आदि भूगोलवेत्ताओं ने परिवहन तन्त्र का अध्ययन करते हुए विभिन्न क्षेत्रों के बीच अन्तर्क्रिया की उत्पत्ति हेतु सापेक्षिक अभिगम्यता के साथ–साथ परिवहन मार्ग जाल के विकास को भी माना है। इससे क्षेत्रीय आधार पर मार्ग संगमता, सम्बद्धता, आदि का अध्ययन करते हुए उन्होंने यह स्वीकार किया है कि मानव की सामाजिक–आर्थिक क्रियाएं धरातल पर बिन्दुवत रूप में वितरित होती है। और क्षेत्र विशेष में इनका केन्द्रीयकरण परिहन तन्त्र के विभिन्न प्रतिरूपों के आधार पर सापेक्षिक रूप में सर्वाधिक गम्य केन्द्रों पर ही होता है।

मुख्य शब्द : औद्योगिक विकास, ग्रामीण संसाधन

प्रस्तावना

विश्व अर्थतन्त्र के विकास प्रक्रिया में प्राथमिक कार्यों के बाद द्वितीयक कार्यों का विकास हुआ, जिसमें विभिन्न प्रकार के उद्योगों का विकास प्राथमिक संसाधनों के आधार पर ही प्रारम्भ हो सका। इसी आधार पर औद्योगिक अर्थतन्त्र विकसित होते हुए आज विभिन्न वैकल्पिक संसाधनों के आधार पर उच्च तकनीकी क्षमता वाले उद्योगों का विकास हुआ है। ऐसे में यूरोपीय और अमेरिकी देशों की स्थिति औद्योगिक विकास के बाद वाली अवस्था में जा पहुची है। सामान्य रूप में सम्पूर्ण विश्व में अर्थतन्त्र के विकास की यह प्रक्रिया समान रूप से विकसित नहीं हुई है बल्कि क्षेत्रीय रूप में यह प्राथमिक अर्थतन्त्र के साथ–साथ विकसित अर्थतन्त्र के रूप में प्रगतिशील रही है। इसी सन्दर्भ में ग्रामीण क्षेत्रों के संसाधन, उनके मूल्यांकन और विकास के आधर पर विभिन्न प्रकार के उद्योगों के विकास की सम्भावनाओं का पता लगाया जा सकता है। उसके लिए पिछड़े अर्थतन्त्र की विशेषता वाले पूर्वी उत्तर प्रदेश के आजमगढ़

जनपद का चयन किया गया है, जो गंगा–घाघरा के निचले दोआब में पूर्व में मऊ जनपद, दक्षिण में गाजीपुर, दक्षिण–पश्चिम में जौनपुर, पश्चिम में सुल्तानपुर, उत्तर–पश्चिम में फैजाबाद और उत्तर में घाघरा नदी से घिरा हुआ है। इस तरह अध्ययन क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 4234 वर्ग किमी. है। और यह उत्तर प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 1.44 प्रतिशत है। 2011 में इसकी कुल जनसंख्या 4613913 तथा जनसंख्या का औसत घनत्व 1089 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है।

भौमिकीय संरचना के अनुसार इस भू–भाग की संरचना प्लीस्टोसीन युग से लेकर आधुनिक टर्शियरी युग के बीच की है। जिसमें यह उत्तर और दक्षिण से निकलने वाली नदियों द्वारा लाये गये अवसादों से निर्मित है। इसीलिए इसको जलोढ़ मैदान कहा जाता है। यहाँ जलोढ़ निक्षेप की गहराई 5000 मी तक मानी जाती है। संरचनात्मक विशेषता से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न प्रकार की जलोढ़ मिट्टियों से निर्मित यह मैदान कृषि और सम्बन्धित संसाधनों से युक्त रहा है। कालान्तर में वनाच्छादित भागों को साफ करके कृषि कार्य किया जाने लगा। ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर बौद्धकाल में यह सघन जंगलों से आवृत्त था। लेकिन उत्तरी–तराई क्षेत्र में बौद्धकाल से ही बुद्ध के जन्मस्थल लुम्बिनी और तिलौराकोट से सारनाथ तक यात्रा के प्रमाण मिलते है। इससे स्पष्ट होता है कि उस समय प्राथमिक अर्थतन्त्र अवश्य विकसित रहा होगा।

कालान्तर में विभिन्न रियासतों के साथ–साथ आखेट, पशुपालन और कृषि कार्य भी विकसित होता रहा। बाद में मध्यकाल में जौनपुर के सरकी साम्राज्य में व्यापक धर्मान्तरण और मुसलमानों के आवागमन के कारण इस क्षेत्र में मुस्लिम आबादी आ गयी और उससे प्रभावित हो करके विभिन्न प्रकार के द्वितीयक कार्यकलापों का विकास आजमगढ़, निजामाबाद, जीयनपुर आदि क्षेत्रों में होने लगा। 18वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन के प्रारम्भ से अनेक केन्द्रों का विकास और परिवहन मार्ग जाल का विकास भी होने लगा, जिससे द्वितीयक और तृतीयक कार्यों का केन्द्रिकरण होने लगा। विभिन्न केन्द्रो पर इस तरह मांग पर आधारित उद्योग विकसित होने लगे। आधुनिक काल में सघन जनसंख्या और उनकी आवश्यकता को पूरा करने वाले द्वितीयक एवं तृतीयक कार्यों का विकास विभिन्न केन्द्रों पर होने लगा। परिवहन मार्ग जाल के विकसित होने पर यह प्रक्रिया आज भी जारी है। लेकिन विभिन्न संसाधनों पर आधारित उद्योग अभी तक विकसित नहीं हो पायें है। जिसके कारण क्षेत्र में ऊर्जा और शक्ति संसाधनों का अभाव रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य जनपद आजमगढ़ में ग्रामीण संसाधनों पर आधारित औद्योगिक विकास प्रक्रिया का विश्लेषण और मूल्यांकन करना है, जिससे भविष्य में इस क्षेत्र के ग्रामीण नियोजन का आधार तैयार किया जा सके। संक्षेप में प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है।

1. अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न ग्रामीण संसाधनों का मूल्यांकन करना।
2. संसाधनों के आधार पर अब तक विकसित उद्योगों का विश्लेषण करना।
3. प्राथमिक संसाधन और औद्योगिक विकास प्रक्रिया में मार्ग जाल के योगदान का वर्णन करना।
4. वर्तमान संसाधन उयोग और औद्योगिक विकास के आधार पर भावी नियोजन प्रस्तावित करना।

आकड़ा स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के आकड़ों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आकड़े जनपद के कृषि विभाग, उद्योग विभाग, सिंचाई विभाग और अन्य स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, जबकि प्राथमिक आकड़ें क्षेत्र सर्वेक्षण के माध्यम से प्राप्त किये गये हैं, जिसमें विभिन्न प्रकार के उद्योगों का व्यक्तिगत सर्वेक्षण करके उसमें उपयोग में लाये जाने वाले संसाधन स्रोत औद्योगिक विकास और उत्पादनों के विपणन सम्बन्धी सूचनाएं ली गयी हैं।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध प्रपत्र के लिए उपलब्ध आंकाड़ो के आधार पर गुणात्मक और सीमित स्तर में मात्रात्मक विधितंत्र को अपनाया गया है, जिसमें क्रमबद्ध रूप में उपलब्ध आंकड़ो के द्वारा मानचित्र निर्माण छायांकन विधि द्वारा पूरा किया गया है। और विभिन्न प्रकार के आकड़ों के वर्गीकरण और विश्लेषण द्वारा अध्ययन के उद्देश्य को पूरा किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण संसाधन

यह स्पष्ट है कि मध्य गंगा मैदानी क्षेत्र का यह भाग केवल ऊर्वर मिट्टी और भरपूर पानी की उपलब्धता के कारण कृषि संसाधन पर ही आधारित है, क्योंकि कृषि के लिए अनुकूल संसाधन यहाँ उपलब्ध है, इसीलिए ग्रामीण औद्योगीकरण कृषि संसाधन पर ही आधारित होना चाहिए। लेकिन अधिकतर उद्योग यहाँ माँग पर आधारित है। इस क्षेत्र के बाजार का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि क्षेत्रीय आवश्यकता कृषि क्षेत्र पर प्रयोग होने वाले अनेक यन्त्रों की मांग पर ही उद्योग आधारित है। इन उद्योगों से सम्बन्धित कोई भी कच्चा माल यहाँ उपलब्ध नहीं है। और ऐसे में उत्पादित सामान बाहर से मंगाये जाते हैं, अधिकतर यहाँ इनसे सम्बन्धित मरम्मत केन्द्र है। जबकि स्थानीय संसाधन जैसे कृषि उपजों पर आधारित उद्योग बहुत कम हैं। मुख्यतः यहाँ ऊर्जा शक्ति के अभाव के कारण है, इस समस्या को दूर करके प्राथमिक संसाधनों पर उद्योग स्थापित किये जाते तो जनपद में तीव्र ग्रामीण औद्योगिक विकास होता। और वर्तमान समय में औद्योगिक विकास में निरन्तरता बनी रहती।

संक्षेप में जनपद के प्राथमिक संसाधनों का मूल्याकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न प्रकार के संसाधन जीवन निर्वाहन अर्थतन्त्र को संचालित करने के लिए है। इन पर आधारित उद्योगों के विकास के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया।

कृषि संसाधन

क्षेत्र के महत्वपूर्ण कृषि उपजों में गेहूँ, धान, मक्का, बाजरा जैसे खाद्यान्न गन्ना, तिलहन, दलहन जैसे फसलें हैं। इनमें केवल औद्योगिक दृष्टि से महत्वपूर्ण निम्नलिखित फसलें हैं। अध्ययन क्षेत्र में गन्ना, चीनी उद्योग का आधार

हैं। लेकिन इसके अन्तर्गत बोया गया क्षेत्र बहुत कम है। और चीनी मिलों का आभाव भी चीनी उद्योग के विकास के लिए प्रतिकूल है। इसीलिए यहां के कृषक अपने उपभोग के लिए ही गन्ना पैदा करते हैं, तथा कुछ खड़सारी उद्योग के आधार पर स्थानीय बाजारों में उत्पादन भेजते हैं। क्षेत्रीय रूप में गन्ने की खेती आजमगढ़, महराजगंज, हरैया, बिलरियागंज में अधिक हैं, जबकि आजमगढ़ के दक्षिणी–पूर्वी और पश्चिमी भागों में बहुत कम होती है। इसीलिए उत्पादन किसान कुटीर उद्योग के रूप में इसका प्रयोग करते हैं

दलहन

इन फसलों के अन्तर्गत अरहर, मटर, मूंग, उड़द की कृषि सम्मिलित है। क्षेत्रीय रूप में तहबरपुर, मिर्जापुर में इनका क्षेत्रफल अधिक है। इसी के साथ ही मेहनगर, तरवाँ, लालगंज, पवई में दालों की अधिक खेती होती है। दालों पर आधारित उद्योग कुटीर उद्योग स्तर पर जनपद के पूर्वी भागों में स्थापित है।

तिलहन

कृषि संसाधनों में तिलहन फसलों का औद्योगिक महत्व अधिक है, लेकिन अध्ययन क्षेत्र में इनका उत्पादन नगण्य है। इसीलिए पहले से स्थापित घरेलू तिलहन उद्योग कहीं–कहीं विकसित है, जिनमें फूलपुर, पवई, आजमगढ़, परसा महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

तालिका संख्या 1

जनपद आजमगढ़ में औद्योगिक महत्व की फसलों के अन्तर्गत क्षेत्र : 2012

क्र.	विकास खण्ड	कुल फसलगत क्षेत्र हे.	दलहन हे.	तिलहन हे.	गन्ना हे.
1	अतरौलिया	20868	1536	76	1119
2	कोयलसा	27070	1275	50	1308
3	अहिरौला	23185	1605	35	1640
4	महराजगंज	26282	1442	43	1790
5	हरैया	25419	1346	14	1760
6	बिलरियागंज	36311	1683	33	1439
7	अजमतगढ़	24940	1839	87	1817
8	तहबरपुर	20306	2045	08	1438
9	मिर्जापुर	19098	1995	48	1538
10	मोहम्दपुर	21263	1663	43	1065
11	रानी की सराय	17306	1722	09	1160
12	पल्हनी	13447	1507	04	945
13	सठियावं	21557	1259	05	1546
14	जहानागंज	24728	1290	08	1137
15	पवई	23210	1730	88	1133
16	फूलपुर	17376	1297	102	1189
17	मार्टिनगंज	27033	1510	44	1113
18	ठेकमा	25665	1549	43	1259
19	लालगंज	28949	1784	37	1172
20	मेहनगर	32004	1778	14	1351
21	तरवा	15735	938	16	578
22	पल्हना	15735	937	16	578
	योग	497559	33765	827	28167

पशुसंसाधन

जनपद आजमगढ़ में पशु संसाधनों की संख्या अधिक रही है, लेकिन इन पर आधारित अनेक प्रकार के उद्योगों का विकास नहीं रहा है। पशु उत्पादित पदार्थ मांस, चमड़ा, हड्डी और दूध उत्पादन विभिन्न उद्योगों के आधार है किन्तु जनपद में पशुओं की संख्या तेजी से घट रही है जिससे पशु उत्पादित पदार्थों पर उद्योग भी तेजी से घट रहे हैं। क्योंकि इन उत्पादनों के मांग की आपूर्ति बाहरी क्षेत्रों से हो जाती है, वैसे जनपद में वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के पशुओं की संख्या 1374950 है जिनमें 39 प्रतिशत पशु गो जाती, 32.02 प्रतिशत भैंस जाति, 1. 69 प्रतिशत भेड़, 26 प्रतिशत बकरी और 1 प्रतिशत सुअर धार्मिक कट्टरता के कारण गो जाति पशुओं को छोड़कर उद्योगों के लिए भेड़, बकरी, सुअर और मुर्गियां महत्वपूर्ण है, लेकिन इनकी संख्या बहुत कम है। गो जाति पशुओं से दूध और दूध से बने पदार्थ ग्रामीण उद्योगों का आधार है, परन्तु ऐसे कुटीर पारिवारिक उद्योग केवल विभिन्न नगरों में ही विकसित है। बकरिया और सुअर महराजगंज, बिलरियागंज, अजमतगढ़, लालगंज, तरवां में अधिक हैं। इसलिए इसमें सम्बन्धित उद्योग पारिवारिक आधार पर विकसित हुए हैं। ग्रामीण संसाधनों में मछली पालन और उत्पादन सीमित हैं। इससे सम्बन्धित उद्योग विकसित नहीं हो पाये है। केवल कुछ क्षेत्रों में जैसे अजमतगढ़ का ताल, नरजाताल, भैसाताल आदि से केवल मछलियों का व्यापारिक उत्पादन होता है।

इस तरह पशु उत्पादनों पर आधारित उद्योग यहाँ विकसित हो सकते थे, लेकिन समुदायों के आधार पर पशुपालन, पशु उत्पादनों के स्थानीय खपत और उपभोग

भी होता रहा है। इन पर आधारित किसी भी प्रकार का उद्योग स्थापित नहीं है।

खनिज संसाधन

अध्ययन क्षेत्र अपनी संरचनात्मक विशेषता के कारण खनिज संसाधनों के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं लेकिन स्थानीय स्तर पर विभिन्न प्रकार की मिट्टियां, बालू आदि बर्तन निर्माण सम्बन्धी उद्योग, ईट निर्माण और कप–प्लेट निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। इनमें निजामाबाद का बर्तन उद्योग बिलरियागंज, महराजगंज, अजमतगढ़ के चीनी मिट्टी से सम्बन्धित उद्योग विकसित है, इनमें लाट घाट, दोहरीघाट, रौनापार महत्वपूर्ण है।

ग्रामीण उद्योग

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि जनपद आजमगढ़ में स्थानीय ग्रामीण संसाधनों पर आधारित ग्रामीण उद्योग अभी तक बहुत कम विकसित है। विभिन्न क्षेत्रों में विकसित इन उद्योगों के सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि इससे सम्बन्धित उद्योग केवल पारिवारिक एवं कुटीर उद्योग हैं। सामान्य रूप में इनमें लगी हुई पूंजी बहुत कम है और रोजगार केवल परिवार तक सीमित है। क्षेत्रीय रूप में आजमगढ़ से छटीयाँव और मुबारकपुर, अजमतगढ़, जीयनपुर, बिलरियागंज, आजमगढ से मोहम्दपुर, मिर्जापुर, निजामाबाद और पश्चिम में महराजगंज, अहिरौला, अतरौलिया महत्वपूर्ण है। जहाँ स्थानीय संसाधनों पर आधारित पारिवारिक उद्योग विकसित हो रहे हैं। वर्तमान समय में स्थानीय संसाधन और मांग पर आधारित कुल ग्रामीण उद्योगों की संख्या 312 है, जिनमें कुल पूँजी विनियोग 13 करोड़ से अधिक है। और कुल रोजमारों की संख्या 944 है। इनमें स्थानीय प्राथमिक संसाधनों पर आधारित उद्योगों में कृषि संसाधन वाले उद्योगों की संख्या–54 है। तथा खाद्य प्रसंस्करण की संख्या–10 है।

तालिका संख्या – 2

आजमगढ़ जनपद में ग्रामीण उद्योग और उनका वर्गीकरण वर्ष–2013

क्रमांक	उद्योग	संख्या	पूंजी	रोजगार
1.	कृषि आधारित उद्योग	54	4224000	179
2.	खाद्य प्रसंस्करण	10	436000	27
3.	वन आधारित उद्योग	46	748000	145
4.	पशु आधारित उद्योग	04	125000	15
5.	खनिज आधारित उद्योग	05	158000	17
6.	वस्त्र आधारित उद्योग	19	512000	69
7.	इंजीनियरिंग उद्योग	66	2608000	180
8.	आभूषण निर्माण उद्योग	21	962000	53
9.	साइकिल एवं आटो रिपेयरिंग उद्योग	35	808000	93
10.	इलेक्ट्रानिक रिपेयरिंग उद्योग	15	243500	30
11.	शिल्प कला उद्योग	02	40000	08
12.	सेवाएं	18	1107000	57
13.	अन्य क्षेत्रीय संसाधनों पर आधारित उद्योग	15	1298000	55
योग	13	312	13391500	944

वनों पर आधारित उद्योगों की संख्या 46, पशु आधारित उद्योग 4, स्थानीय खनिजों पर आधारित उद्योग केवल 5 है। इस प्रकार प्राथमिक संसाधनों पर आधारित उद्योगों की संख्या कम है। और इनका वितरण भी कुछ सीमित क्षेत्रों में ही है। यदि व्यवस्थित रूप में स्थानीय संसाधनों पर आधारित ग्रामीण उद्योगों का विकास किया जाता तो औद्योगीकरण का स्तर ऊँचा होता। और स्थानीय संसाधनों का विकास भी अधिक होता, लेकिन ऐसा अभी तक नहीं हो पाया।

सम्भावित नियोजन

अध्ययन क्षेत्र में जो भी ग्रामीण संसाधन उपलब्ध है उनका वितरण और उत्पादन सीमित है परम्परागत रूप में कुटीर और पारिवारिक उद्योग विकसित होते रहे हैं। लेकिन क्षेत्रीय रूप में इनका विकास तकनीक, पूँजी और ऊर्जा की उपलब्धता के आधार पर आसानी से किया जा सकता है। स्थानीय उत्पादनों पर आधारित उद्योग जैसे खाद्य संसाधन, खाद्य प्रसंस्करण, सब्जियों पर आधारित अन्य प्रसंस्करण उद्योग, दुग्ध और दूध पदार्थों पर आधारित उद्योग और मिट्टियों पर आधारित उद्योग अधिक संख्या में विकसित हो सकते हैं। इनके विकास की सम्भावनाओं वाले क्षेत्र जेसे निजामाबाद, तहबरपुर, मिर्जापुर में मिट्टी के बर्तन बनाने का उद्योग, फूलपुर, कोयलसा, अहिरौला में तिलहन सम्बन्धी उद्योग, महराजगंज, जीयनपुर, तहबरपुर आदि में चावल पर आधारित उद्योग विकसित हो सकते हैं। इसी तरह सठियाँव से लेकर बिलरियागंज और अहिरौला तक गन्ने पर आधारित पारिवारिक उद्योग और चीनी मिलों का विकास किया जा सकता है इन सबके लिए स्थानीय मार्गजाल का विकास एवं प्रशिक्षित श्रमिक और पूँजी की उपलब्धता आवश्यक है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र कृषि पर आधारित अर्थतंत्र वाला क्षेत्र है, जनसंख्या दबाव के कारण कृषि भी जीवन निर्वाहक है। इसीलिए कृषि में खाद्यानों की प्रधानता है। चूंकि जनसंख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, और खाद्यान्न प्रधान कृषि होने के कारण कृषि के आधार पर भी उद्योगों की स्थापना के लिए ग्रामीण क्षेत्र में पूंजी निर्माण अल्प बचत के कारण सम्भव नहीं है। इसीलिए यहाँ कृषि अर्थतंत्र को मजबूत करने के लिए कृषि को ही उद्योग प्रधान कृषि के रूप में विकसित करना चाहिए। अध्ययन क्षेत्र में उगाई जाने

वाली फसलों के आधार पर ही मध्यम और बड़े पैमाने के उद्योग विकसित करने चाहिए। आजमगढ़ केन्द्रीय स्थित वाला क्षेत्र है, जो सड़क रेलमार्ग के चारों ओर से क्षेत्रों से जुड़ा है। इसीलिए कृषि पर आधारित विभिन्न प्रकार के उद्योगों की स्थापना करके उनके विपणन की व्यवस्था करना आवश्यक है, क्योंकि सघन जनसंख्या होने के कारण कृषि सम्बन्धी उत्पादनों की मांग अधिक होगी। जिससे ग्रामीण क्षेत्र में पूंजी निर्माण होगा और इसी के आधार पर औद्योगिक विकास के लिए पूंजी उपलब्ध हो सकती है।

आजमगढ़ जनपद में वर्तमान समय में उद्योगों के प्रकार और पैमाने को देखने से स्पष्ट होता है कि जो भी औद्योगिक केन्द्र है, वह नगर अथवा बाजार केन्द्र पर लघु या कुटीर उद्योग के रूप में है, जो स्थानीय मांग को पूरा करते है। इनके स्वरूप और संरचना को बदलने की आवश्कता है, और लगभग बड़े केन्द्रों पर इन्हें उद्योगों की बड़े पैमाने पर अवस्थापना की जा सकती है। और कृषि के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय विपणन व्यवस्था द्वारा उपभोक्ता बाजार भी विकसित किया जा सकता है। (मानचित्र संख्या–1)

Fig-1

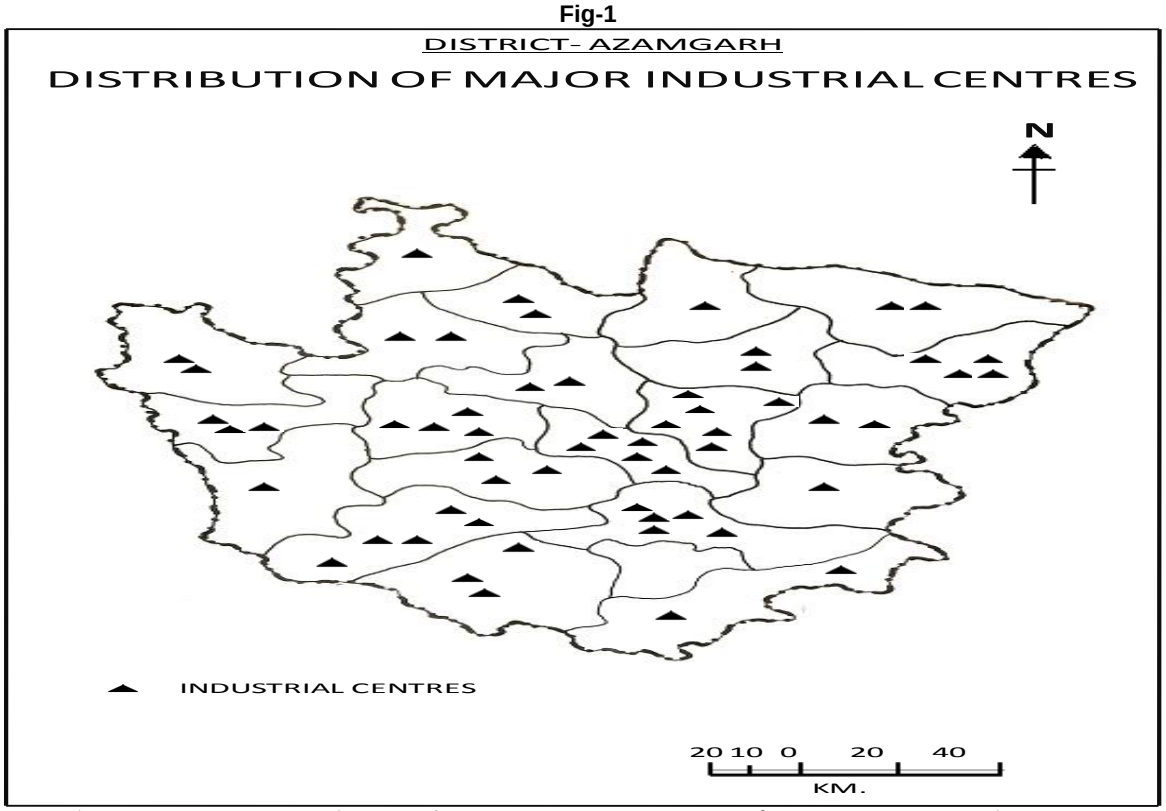

उपरोक्त मानचित्र संख्या 1 से स्पष्ट है कि लघु एवं कुटीर पैमाने पर उद्योग स्थानिक मांग पर आधारित है। इसीलिए इनका उत्पादन सीमित है, ये स्थानीय आवश्यकता को भी सीमित नहीं कर पाते है। और कृषि सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के सामान अब भी बाहर से मंगाये जाते हैं। इसीलिए नगर केन्द्रों और बड़े बाजारों पर वर्तमान उद्योगों में ही कुछ को स्थापित करके बड़े पैमाने अथवा फैक्ट्री उद्योग के रूप में विकसित किया जा सकता है तथा कुछ महत्वपूर्ण नगरों और बाजारों में स्थानीय संसाधन अथवा पारम्परिक उद्योगों को स्थापित करके इस पिछड़े क्षेत्र का भी तीव्र औद्योगीकरण किया जा सकता है।

संसाधन विकास एवं मार्गजाल विश्लेषण

परिवहन किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास एवं प्रगति का द्योतक है। विकास की कल्पना ही परिवहन से जुड़ी हुई है। वास्तव में आज विश्व के लिए परिवहन साधनों का उतना ही महत्व है, जितना कि व्यक्ति के शरीर में रक्त संचरण का होता है। इस तरह भौगोलिक सन्दर्भ में परिवहन मार्ग मानवीय गतिशीलता के साथ–साथ मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संसाधनों में गतिशीलता उत्पन्न करते हैं, क्योंकि व्यक्तिगत रूप में किसी भी मानव का अस्तित्व अकेले रहकर सम्भव नहीं है। बल्कि उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनेक संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिन्हें वह दूसरे क्षेत्रों से प्राप्त करता है। इस प्रक्रिया में मानव एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाता है और आवश्यकता की वस्तुएं लाता है। इसी तरह भौगोलिक सन्दर्भ में विभिन्न क्षेत्र अपनी सामाजिक, आर्थिक आवश्यकताओं हेतु एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं और निर्भरता की यह स्थिति परिवहन मार्गों द्वारा ही सुनिश्चित होती है। परिवहन के लिए मार्ग विकसित होने पर मानव और वस्तुओं के प्रवाह के साथ–साथ इससे सम्बन्धित बहुत से संरचनात्मक तत्वों का विकास होता है। इस तरह विभिन्न संरचनात्मक तत्वों का भू–वैन्यासिक प्रतिरूप भी विकसित होता है, जो कालांतर में परिवर्तनशील प्रवृत्ति के कारण मानव के सामाजिक–आर्थिक भू–दृश्य का जटिल तंत्र बन जाता है।

भौगोलिक संकल्पना के रूप में यदि क्षेत्र की अवधारणा का विश्लेषण किया जाय तो यह स्पष्ट होता है कि दूसरे प्राणियों की तरह मानव में भी क्षेत्रीयता की भावना रही है। मनुष्य ने इसी क्षेत्रीयता के सन्दर्भ में विशिष्ट भौगोलिक अवस्थितियों पर अपने सामाजिक–आर्थिक कार्यों और जीवनशैली को विकसित किया है। मानवीय जनसंख्या में वृद्धि, आवश्यकताओं में वृ(ि तकनीकी विकास के कारण संसाधनों और उस की उपयोगिता में वृ(ि एक क्षेत्र के मानव समाज का दूसरे क्षेत्र के मानव समाज के सम्पर्क अथवा क्षेत्रीय अन्तक्रिया को विकसित किया होगा। जिससे दोनों के बीच अंर्तक्रियात्मक सम्बन्धों के कारण भू–वैन्यासिक प्रतिरूप विकसित हुआ। इस तरह भौगोलिक अर्थ में क्षेत्रीय विस्तार, अवस्थिति, घनत्व तथा परिवर्तनशील प्रवृत्ति के गुण होते हैं और इन विशेषताओं के सन्दर्भ में कुछ क्षेत्रों में क्रमशः विकसित होता हुआ मानव समाज अपने अस्तित्व को भी विकसित करता जाता है, लेकिन कालक्रम में विकसित होती हुई आवश्कताओं के कारण उसे दूसरे क्षेत्र से भी सम्बन्ध बनाना पड़ता है। और इस प्रक्रिया में परिवहन का विकास होता है। इसलिए परिवहन दो विशिष्ट अवस्थितियों के बीच मनुष्य का सामानों की गतिशीलता के रूप में परिभाषित किया जाता है। आर्थिक संदर्भ में परिवहन प्रत्यक्ष तौर पर उत्पादन में सहायक नहीं होता है, बल्कि यह सेवा के रूप में आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयोग में लाया जाता है। इसी गुण के कारण बहुत से अर्थ–शास्त्रियों ने इसे उत्पादन का भी एक कारक माना है। इस प्रकार विभिन्न भौगोलिक अवस्थितियों अथवा क्षेत्रों के बीच परिवहन मार्ग के अनुसार आवश्यकता पूर्ति हेतु उत्पन्न होता है। यदि आवश्यकता नहीं रहती है तो परिवहन उत्पन्न नहीं हो सकता। उलमैन ने दो क्षेत्रों के बीच परिवहन उत्पन्न होने के लिए तीन परिस्थितियों का होना आवश्यक बताया है– जिनका विवरण निम्न है।

परिपूरकता

इसे स्पष्ट करते हुए उलमैन ने माना है कि दो क्षेत्रों के मध्य अन्तर्क्रिया स्थापित होने के लिए एक क्षेत्र में किसी वस्तु विशेष की माँग और दूसरे क्षेत्र से उसकी आपूर्ति होना आवश्यक है। पुनः उलमैन ने स्पष्ट किया है कि दोनों क्षेत्रों के बीच परिपूरक तत्वों के रूप में कर्मस्थल, वाणिज्य, शिक्षा, विपणन, सामाजिक तथा एवं मनोरंजन, आश्रय स्थल और तथ्य आवश्यक है। मनुष्यों के अतिरिक्त सामानों के परिवहन में कच्चे पदार्थों का संग्रहण, उत्पादित सामानो का परिवहन और विभिन्न सामानों का वितरण आदि सम्मिलित हैं।

मध्यवर्ती आपूर्ति स्रोतों का अभाव

उलमैन के इस सिद्धांत के अनुसार किन्हीं दो क्षेत्रों में परिवहन के उत्पत्ति का कारण एक से अधिक क्षेत्रों में आवश्यकतापूर्ति के अनेक अवसरों का होना है। यदि किसी मांग के संदर्भ में बहुत से विकल्प उपलब्ध रहते हैं, तो सर्वाधिक सुगम एवं आकर्षण वाले बिन्दुओं के माध्यम से ही परिवहन विकसित होता है।

विनिमय क्षमता

उलमैन के अनुसार दो स्थानों के मध्य परिवहन या अन्तर्क्रिया परिवहन की लागत पर निर्भर करती है। ऐसी परिस्थिति में कम लागत वाले क्षेत्र या स्थान के सन्दर्भ में ही परिवहन विकसित होता है। इसकी लागत सामान्यतया मनुष्यों तथा विभिन्न वस्तुओं के सम्बन्ध में अलग–अलग होती है। इसीलिए विभिन्न स्थानों के बीच अन्तर्क्रिया एक ही अवसर पर सामानों के उपलब्ध होने पर सबसे कम लागत वाले केन्द्रों के सम्बन्ध में परिवहन उत्पन्न होता है।

इस प्रकार दो भौगोलिक स्थितियों अथवा क्षेत्रों के बीच परिवहन का विकास मानव की सामाजिक आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने का एक अनिवार्य तथ्य है। इस प्रक्रिया में मानव समाज के प्रारम्भिक विकास क्रम से लेकर अब तक सभ्यता के परिवर्तनशील प्रतिरूप के अनुसार परिवहन की विशेषताएं भी परिवर्तित होती गयी हैं। इसीलिए सामाजिक आर्थिक तत्वों का भू–वैन्यासिक तन्त्र भी परिवहन तन्त्र के सन्दर्भ में परिवर्तित होता गया। यह तथ्य परिवहन के विभिन्न साधनों को कालक्रमानुसार विश्लेषित करने पर स्पष्ट हो जाता है। किसी परिवहन तन्त्र के लिए चार प्रकार के तथ्य आवश्यक होते हैं। जो क्रमशः मार्ग, साधन, उत्प्रेरक शक्ति एवं गन्तव्य बिन्दु हैं।

यदि परिवहन के लिए आवश्यक उपर्युक्त तथ्यों के विकास और वितरण प्रतिरूप का अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि मानव द्वारा क्षेत्रीयता की अभिव्यक्ति के प्रारम्भिक समय में स्थानीयता की भावना अधिक थी और परिवहन मार्ग के रूप में कोई भी भाग विकसित नहीं था। मनुष्य अपने स्वयं द्वारा निर्मित क्षेत्र में प्राकृतिक दृष्टिकोण से सुगम रास्ते को मार्ग के रूप में प्रयोग करता था और अपनी सीमित आवश्यकताओं हेतु स्वयं ही परिवहन करता था। उसका गन्तव्य बिन्दु भी सीमित था। लेकिन सभ्यता के विकास के साथ–साथ मानव का क्षेत्रीय प्रभाव भी विकसित होता गया तथा तकनीकी विकास और आवश्यकताओं के कारण मानव ने क्रमशः साधनों के रूप में जानवरों और जानवरों द्वारा खीचीं जाने वाली गाड़ियों का प्रयोग किया। इसके लिए क्रमशः कच्चे मार्गों का विकास किया। भू–वैन्यासिक तन्त्र के रूप में इन मार्गों के सहारे मध्यवर्ती बिन्दुओं और गन्तव्य बिन्दुओं का भी विकास हुआ। पुनः कृत्रिम अथवा प्राकृतिक ऊर्जा चालित वाहनों के विकास के साथ–साथ परिवहन मार्गों में भी विविधता आई और स्थलीय, जल एवं वायु यातायात का विकास हुआ, और इसी के अनुसार विभिन्न प्रकार के स्थलीय, जल तथा वायु परिवहन के साधनों का भी विकास हुआ। जिससे मानव का क्षेत्रीय प्रभाव व्यापक होता गया और विभिन्न प्रकार के परिवहन मार्गों तथा उनपर चलने वाले परिवहन साधनों के कारण गन्तव्य स्थलों तथा मध्यवर्ती स्थलों का भू–वैन्यासिक तन्त्र विकसित हुआ। वर्तमान समय में इसी तन्त्र के कारण एक क्षेत्र का दूसरे से कार्यात्मक रूप में अन्तर्सम्बन्धित होता जा रहा है। और परिवहन मार्गों का जटिल प्रतिरूप और उनपर स्थित विभिन्न प्रकार के स्थानिक तन्त्र के परिणामस्वरूप मानव के सामाजिक–आर्थिक कार्यों की क्षेत्रीय अभिव्यक्ति मूर्तरूप में विकसित हो रही है। यही कारण है कि भौगोलिक क्षेत्र में मानव के सामाजिक–आर्थिक भू–दृश्य का विकास ऐसी विशिष्ट भौगोलिक अवस्थितियों के सन्दर्भ में हुआ है, जो परिवहन

तन्त्र में अपेक्षाकृत सुविधाजनक केन्द्रों पर है। इस प्रकार परिवहन तन्त्र के विकसित प्रतिरूप में क्षेत्रीय रूप में अभिगम्य स्थलों पर मानव के सामाजिक–आर्थिक कार्यों का मूर्त रूप परिलक्षित होता है।[1]

इस तरह किसी भी क्षेत्री में परिवहन की विभिन्न विशिष्टताओं का विकास और वितरण उस क्षेत्र के मानव, समाज और सामाजिक–आर्थिक संसाधनों में गतिशीलता उत्पन्न करता है तथा इसी गतिशीलता के परिणामस्वरूप परिवहन साधनों और मार्गतन्त्र में सापेक्षिक रूप में अभिगम्य केन्द्रों पर मानवीय क्रिया–कलापों का उध्वार्धर और भौतिक विकास भी होता है। जिससे ऐसे केन्द्र संगम केन्द्र के रूप में विकसित होते हैं। कालांतर में इस केन्द्र का अन्तर्क्रियात्मक सम्बन्ध परिवहन तंत्र के सहारे ही क्षेत्रीय प्रतिरूप ग्रहण करता है। अंत में पदानुक्रमिक रूप में सही प्रक्रिया सम्पूर्ण क्षेत्र के रूप में घटित होती है और इसी तरह एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के बीच इस प्रक्रिया के चलते सामाजिक–आर्थिक रूपांतरण अथवा विकास प्रतिरूप का प्रसार होता है। इसलिए भूगोल में परिवहन तंत्र और सामाजिक–आर्थिक विकास प्रक्रिया के उद्भव विकास और वितरण में धनात्मक सह सम्बन्ध मिलता है।

सर्वप्रथम उलमैन[2] ने परिवहन भूगोल को एक स्वतंत्र शाखा के रूप में स्थापित किया। इन्होंने 1954 में कहा कि ''परिवहन क्षेत्रों के मध्य सम्बन्धों का सूचकांक होता है। अतः यह भूगोल का एक अपरिहार्य पहलू है। उलमैन के अतिरिक्त विलिंगट्न (1887), जैफरसन[3], गाटमैन[4], स्केटलवर्ग, थामस, सिले[5] आदि सब ने भूगोल की इस विशिष्ट शाखा को अपने योगदानों से समृद्ध किया है।

मात्रात्मक क्रांति के सूत्रपात के साथ परिवहन भूगोल की विषय वस्तु में विचारणीय एवं महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। जैसे–स्थिति सि(ांत और स्थानिक विश्लेषण, प्रादेशिक विज्ञान, रेखीय कार्यक्रम जैसे विभिन्न तकनीकियों में परिवहन की भूमिका आदि। परिवहन के सम्बन्ध में उलमैन के आधारभूत दृष्टिकोण को गुरूत्व मॉडल के प्रयोग के माध्यम से परिवहन विश्लेषण को नया आयाम प्रदान किया। कान्सकी[6] और हैगेट[7] के कार्यों से परिवहन भूगोल में महत्वपूर्ण परिवर्तन आये। कान्सकी ने सम्पूर्ण जाल को एक ग्राफ के रूप में भाववाचक बनाकर जाल संरचना के विभिन्न सूचकांक प्रदान किये। पिट्स[8] ने ग्राफ सै(ान्तिक सूचकांकों के ऐतिहासिक विश्लेषण को मास्को की अभिगम्यता का परिकलन किया। हैगेट[9] ने एक केन्द्र के चारों ओर क्षेत्र को संगठित करने की संकल्पना प्रस्तुत की। गार्नियर[10] ने अभिगम्यता मैट्रिक्स का प्रयोग कर ब्राजील के राजमार्ग के एक भाग का विश्लेषण किया तथा परिवहन को आश्रित चर मान कर विभिन्न स्वतंत्र चरों से अन्तर्सम्बन्ध का विश्लेषण करने का प्रयास किया।

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ के सन्दर्भ में परिवहन मार्ग जाल के उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि यहाँ मध्यवर्ती क्षेत्रों विशेष रूप से उत्तर–पूर्व में बिलरियागंज और अजमतगढ़, मध्य में पल्हनी, रानी की सराय, मोहम्मदपुर और मिर्जापुर में सड़क मार्ग जाल के सन्दर्भ में क्षेत्रीय अभिगम्यता अधिक है। जबकि दक्षिणी–पूर्वी और उत्तरी भागों में सड़को के क्रम के अनुसार ही अभिगम्यता कम है। सड़क मार्ग जाल के क्षेत्रीय विकास प्रतिरूप का अध्ययन करने के लिए अल्फा, बीटा, गामा सूचकांकों के संयुक्त प्रतिरूप के आधार पर मार्ग जाल विकास का क्षेत्रीय प्रतिरूप ज्ञात किया गया है। जो यह सिद्ध करता है कि सर्वाधिक विकसित मार्ग जाल आजमगढ़ मुख्यालय के समीपवर्ती भागों में है। जो राष्ट्रीय राज मार्ग और राज्यस्तरीय मार्गों के सघन वितरण के कारण है। जबकि अध्ययन क्षेत्र के चारों ओर सीमावर्ती भागों में मार्ग जाल प्रतिरूप अपेक्षाकृत कम विकसित है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में परिवहन मार्गजाल धरातलीय बनावट के आधार पर विकसित है। जिससे यह परिकल्पना पुष्ट होती है कि परिवहन मार्ग जाल पर भौतिक कारकों का प्रभाव पड़ता है।

सम्भावित औद्योगिक नियोजन

सम्भावित औद्योगिक नियोजन निम्नलिखित प्रमुख केन्द्रों पर बड़े पैमाने के उद्योगों से सम्बन्धित किया जा सकता है, इसमें महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र निम्नलिखित है–

मुबारकपुर

अध्ययन क्षेत्र में अभी भी मुबारकपुर एक वृहत औद्योगिक केन्द्र है, लेकिन यहाँ अबतक विकसित उद्योग केवल पारिवारिक और कुटीर उद्योग के रूप में महत्पूर्ण उद्योग रेशम, सूती वस्त्र उद्योग है। जिसके अन्तर्गत साड़ियाँ बनायी जाती है। लेकिन उससे सम्बन्धित कच्चा माल, सूत और अन्य सामान बाहर से आयात किये जाते हैं और स्थानीय स्तर पर हैण्डलूम और पावरलुम के आधार पर साड़ियों की बुनाई की जाती है। यही उद्योग छिट–पुट रूप में सठियाँव, जीयनपुर, अजमतगढ़, और जहानागंज में भी फैला है। इन सबके स्थान पर मुबारकपुर में फैक्ट्री उद्योग के रूप में सूती और शिल्क मील की स्थापना की जा सकती है, जिसमें सूती धागे का उत्पादन, और शिल्क की साड़ियों का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जा सकता है। क्योंकि अभी तक यही प्रक्रिया आयातीत धागों द्वारा पूरित की जाती हैं, तथा जरी के काम के लिए यहाँ बुनी गयी साड़िया वाराणसी भेजी जाती है, जो बनारसी शिल्क साड़ी के रूप में एक प्रसि(ब्राण्ड बन जाती है। इसी को आधार बनाकर स्थानीय सूती मिल में साड़ी बुनाई और जरी का कार्य किया जा सकता है। और यही यहां का स्वतन्त्र ब्राण्ड बन सकता है, जिससे इसका बाजार पूरे देश तक फैल सकता है।

महराजगंज

महराजगंज अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी पश्चिमी भाग के खादर क्षेत्र में है, जो चावल प्रधान क्षेत्र का प्रमुख औद्योगिक केन्द्र है। महराजगंज और इसके आस–पास लघु पैमाने की चावल मिले बिलरियागंज, हरैया, अजमतगढ़, कप्तानगंज में स्थापित है, ये मिले चावल की स्थानीय मांग को पूरा करती हैं। इसी को बड़े पैमाने पर फैक्ट्री के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है। इस तरह बड़े पैमाने पर चावल मिल महराजगंज में स्थापित करके समीपवर्ती अम्बेडकरनगर, संतकबीरनगर और गोरखपुर से धान का आयात करके इस चावल मील को संचालित किया जा सकता है। इसके लिए उपलब्ध परिवहन मार्ग, घाघरा पर पुलों के बन जाने से सम्पूर्ण

पूर्वी उत्तर–प्रदेश को बाजार के रूप में विकसित कर सकता है।

फूलपुर

आजमगढ़ के पश्चिमी भाग में फूलपुर कस्बा एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। कृषि संसाधनों के रूप में यहाँ अध्ययन क्षेत्र में तिलहन खाद्यान्नों में गेहूँ आदि की प्रधानता है। तिलहन पर आधारित लघु पैमाने के उद्योग यहाँ और समीपवर्ती कस्बों में पारिवारिक आधार पर संचालित होते हैं। तिलहन का उत्पादन औद्योगिक फसल के रूप में नहीं होता है, बल्कि रवी की फसलों के साथ–साथ किया जाता है। स्थानीय स्तर पर खाद्य तेल के रूप में इसकी मांग बहुत ही अधिक है। इसीलिए फूलपुर कस्बे में बड़े मैमाने के खाद्य तेल की मील स्थापित की जा सकती है। समीपवर्ती क्षेत्रों आजमगढ़, मऊ, गाजीपुर, अम्बेडकरनगर, जौनपुर में बड़े पैमाने की कोई भी खाद्य तेल की मील नहीं है। केन्द्र प्रभावित होने के कारण फूलपुर में बडे पैमाने पर खाद्य तेल मील स्थापित करके क्षेत्रीय जनपदों से कच्चा माल और बाहर से भी तिलहन आयात करके इस मील को संचालित किया जा सकता है, क्योंकि खाद्य तेल की भारी मांग के कारण यह एक टिकाऊ उद्योग के रूप में संचालित होता रहेगा।

अन्य केन्द्र

अध्ययन क्षेत्र में उपरोक्त बृहत केन्द्रों के अतिरिक्त बहुत से कस्बों और बाजारों में स्थानीय संसाधनों पर ही लघु पैमाने के उद्योग स्थापित हो सकते हैं जिसे जीयनपुर, जहानागंज, मेहनगर, और निजामाबाद में गन्ने पर आधारित खाड़सारी उद्योग और निजामाबाद, कप्तानगंज, अतरौलिया आदि में स्थानीय जूट अथवा सनई पर आधारित रस्सी बनाने के उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। इनकी भी क्षेत्र में अधिक मांग है। यद्यपि बिलरियागंज, चाँदपुर में रस्सी सम्बन्धी उद्योग हैं, लेकिन वे क्षेत्रीय आवश्यकता को पूरा नहीं कर पाते हैं।

प्रसंस्करण उद्योग

आजमगढ़ जनपद में कृषि उत्पदनों पर आधारित प्रसंस्करण उद्योगों का अभाव है। यद्यपि क्षेत्र में इसकी भारी मांग है। जैसे चावल पर आधारित, चूड़ा, विभिन्न प्रकार की सब्जियों पर आधारित अचार–मुरब्बा जैसे उद्योग यहां नहीं है। यद्यपि क्षेत्र में बाहर से इनको आयात किया जाता है। इसलिए धान उत्पादक क्षेत्रों में विशेषकर हरैया तहसील, मेहनगर तहसील, आजमगढ़ सदर में चूड़ा बनाने की छोटे–छोटे उद्योग विकसित हो सकते है। ऐसे ही स्थानीय सब्जी उत्पादन पर आधारित आचार और मुरब्बा बनाने के उद्योग आजमगढ़ नगर और समीपवर्ती छोटे–छोटे कस्बों में विकसित करके स्थानीय मांग को पूरा किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में स्थानीय ग्रामीण संसाधनों पर आधारित उपरोक्त बड़े पैमाने के उद्योगों की स्थापना से जहाँ कृषि उत्पादन प्रतिरूप में परिवर्तन आयेगा। और उसी के आधार पर औद्योगिक सम्भावनाओं वाली फसलों की उत्पादन में वृ(होगी। स्थानीय कारखाानों में उनकी मांग के आधार पर आपूर्ति से क्षेत्र के कृषक उन फसलों की कृषि विकसित करने के लिए उत्साहित होंगे। और उनको तुरन्त उत्पादन मूल्य प्राप्त होगा। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी पूंजी निर्माण और वचत होने से स्थानीय कृषि अर्थतंत्र, कृषि औद्योगिक अर्थतंत्र के रूप में विकसित हो जायेगा।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण औद्योगीकरण और समस्याओं तथा सम्भावनाओं का विस्तृत विश्लेषण करने से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि यहाँ प्राथमिक संसाधनों पर आधारित उद्योगों के लिए कच्चे माल का अभाव है। इसलिए ऐसे उद्योग वर्ष भर संचालित नहीं होते हैं। इसी के साथ अनेक ग्रामीण उद्योगों के लिए अपेक्षाकृत दहलीज स्तर भी उपलब्ध नहीं है। ऊर्जा की भी समस्या महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही लगभग सभी उद्योगों के लिए पूंजी की कमी भी महत्वपूर्ण है।

अंत टिप्पणी

1. *Taffee, E.J., Richard, L.,: "Transport Expansion in Underdeveloped Morril. Peter and Gould, R. (1963) Countries.", a Comparative Analysis, Geographical Review, Vol. 53.*
2. *Ullman, E.L. and Meyer, H.M. (1954) :"Transportation Geography : American Geography : Enventory and Praspects", P. 146*
3. *Jafferson, M. (1928): "The Civilizing Rails", Economic Geography Vol-4, PP. 121-32.*
4. *Coatman, J. (1928) : "India in 1927-28 Calcutta", Central Publication Branch, Govt. Of India.*
5. *Seally, (1957): "The Geography of Air Transport", London: Hutchinson University Library.*
6. *Kansky, K.J. (1963): "Structure of Transport Network: Relationship between Network Geogmetry and Regional Characteristics" University of Chicago, Dept of Geog., Research Paper N. 48.*
7. *Hagget, P. (1966): "Locational Analysis in Human Geography", London Edward Arnold.*
8. *Pitts, F.R. (1965) : "A Graph Theoretic Approach to Historical Geography", Professional Geographers, Vol. 17.*
9. *Hagget, P. and Chorley, R.J. (1969) : "Network Analysis in Geography", London, Arnold Network, St. Martin's Press.*
10. *Gauthier, H.L.: "Geography, Transportation and Regional Development", Economic Geography, Vol. 86,1970*